St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (16)

Class- 11 पाठ - रसखान के सवैये

Date: 30/01/2021

लेखक परिचय

रसखान (जन्म:1548 ई) कृष्ण भक्त मुस्लिम क व थे। उनका जन्म पहानी, भारत में हुआ था। हिन्दी के कृष्ण भक्त तथा रीतिकालीन रीतिमुक्त क वयों में रसखान का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे वट्ठलनाथ के शष्य थे एवं वल्लभ संप्रदाय के सदस्य थे। रसखान को 'रस की खान' कहा गया है। इनके काव्य में भक्ति, शृंगार रस दोनों प्रधानता से मलते हैं। रसखान कृष्ण भक्त हैं और उनके सगुण और निर्गुण निराकार रूप दोनों के प्रति श्रद्धावनत हैं। रसखान के सगुण कृष्ण वे सारी लीलाएं करते हैं, जो कृष्ण लीला में प्रच लत रही हैं। यथा- बाललीला, रासलीला, फागलीला, कुंजलीला, प्रेम वाटिका, सुजान रसखान आदि। उन्होंने अपने काव्य की सी मत परि ध में इन असी मत लीलाओं को बखूबी बाँधा है। मथुरा जिले में महाबन में इनकी समा ध हैं|

रसखान अर्थात् रस के खान, परंतु उनका असली नाम सैयद इब्राहिम था और उन्होंने अपना नाम केवल इस कारण रखा ता क वे इसका प्रयोग अपनी रचनाओं पर कर सकें।

रसखान तो रसखान ही था जिसके नाम में भी रस की खान थी। रसखान जैसा भगवान का भक्त होना मुश्किल है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने जिन मुस्लिम हरिभक्तों के लये कहा था, "इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिन्दू वारिए" उनमें रसखान का नाम सर्वोपरि है।

सारांश

१) मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल के ग्वारान।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं तो वही गरी को जो धर्यो कर छत्र पुरंदर कारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं म ल का लंदी- कूल कदंब की डारन।।

उ: प्रस्तुत पंक्तियां रसखान द्वारा र चत भक्त की असीम इच्छा को व्यक्त करते हैं। यदि रसखान पुन: जन्म प्राप्त करें तो वे ब्रज में ही जन्म लेने के आकांक्षा को अपनी पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त कये है।

रसखान ब्रजभू म के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करते हुए कहते हैं क यदि मैं अगले जन्म में मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लू तो गोकुल गांव के ग्वारन के बीच वास करूँ। यदि पशु बनकर जन्म लूं, जिसमें मेरा कोई हाथ नहीं, तो मैं गाय बनकर नित्य- प्रति नंद की गायों के मध्य ब्रजभू म में वचरण करना चाहता हूँ। यदि पत्थर बनकर जन्म लूं तो मेरी इच्छा है क मैं उसी गोवर्धन पर्वत का अंश बनूँ जिसे श्रीकृष्ण ने ब्रजवा सयों को इंद्र से बचाने के लए अपनी अंगुली पर धारण कया था और अगर पक्षी के रूप में मेरा पुनर्जन्म हो तो यमुना के तट पर कदंब की डालों पर अपना नीड़ का निर्माण करूँ।

२) वा लकुटी अरू कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठवीं सद् ध नवौ नि ध को सुख नंद की गाइ चराइ बिसरौं।।
रसखानी कबौं इन नैनन सों ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक ये कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।।

उ: प्रस्तुत पंक्तियों में श्रीकृष्ण के प्रति रसखान अपनी आसक्ति को व्यक्त करते हुए कृष्ण से संबं धत प्रत्येक स्थान व वस्तु से मोह को प्रकट कए हैं।

रसखान कहते हैं क मैं श्री कृष्ण के सन्निध्य के लए तीनों नगरों (तीनों लोकों) के राज्य को सम र्पत करूँ। नंद की गायों को चढ़ाने के बदले संसार की आठों सद् धयों एवं कुबेर की नव नि धयों के सुख को त्याग दूँ। जबसे मैंने अपने दोनों नैनों से ब्रज के वन, उपवन, तालाब को देखा है, तब से इच्छा होता है क मैं इस ब्रज प्रदेश में निवास करने के लए करोड़ों स्वर्ण महल को भी त्याग दूँ।

३) सेष गनेश महेश दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावें।
जाहि अनादि अनंत अखंड, अछेद अभेद सवेद बतावें।।

नादर से सुक व्यास रटैं, प च हारे ताऊ पुनि पार न पावै।
ताहि अहीर की छोहरियां, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावै।।

उ: प्रस्तुत पंक्तियों में रसखान ने कृष्ण के अज्ञात रूप को देखकर निर्गुण- निराकार बताते हुए सगुण रूप का दर्शन करवाया है।
कृष्ण की भक्ति में लीन रसखान कहते हैं जिस कृष्ण के गुणों का शेषनाग, वघ्नहर्ता, महेश्वर सूर्य, इंद्र निरंतर गान करते हैं, वेद जिसके अनंतर रूप का ज्ञान प्राप्त न कर पाने के कारण उन्हें अनादि, अनंत, अखंड अछेद एवं अभेद आदि चमत्कारिक शब्द से युक्त कया है। नारद से सुखदेव, व्यास जैसे मह र्ष भी जिनके स्वरूप भेदीकरण नहीं कर पाए एवं पराजित होकर बैठ गए, उन्हीं कृष्ण को गो पयाँ छछिया- भर छाछ के लए नचाती है।

<u>शब्दार्थ</u>

१) बसौं- बसना।
२) धेनु- गाय।
३) मंझारन- मध्य।
४) पाहन- पत्थर।
५) पुरंदर- इंद्र।
६) का लंदी- यमुना।
७) डारन- डालों।
८) लकुटी- लाठी।
९) कमरिया- कंबल।
१०) तड़ाग- तालाब।
११) कोटिक- कड़ोरों।
१२) कलधौत- सोना।
१३) धाम- घर।
१४) करील- महल।
१५) प च- को शश करके।

<u>लघु प्रश्नोंत्तर</u>

१) "पाहन हौं तो वही गरी को जो धर्यो कर छत्र पुरंदर कारन।"
i) प्रस्तुत पंक्ति कस भाषा में र चत है?
उ: प्रस्तुत पंक्ति ब्रज भाषा में र चत है।
ii) प्रस्तुत पंक्ति में कस गरी की ओर संकेत कया गया है?
उ: प्रस्तुत पंक्ति में गोवर्धन पर्वत की ओर संकेत कया गया है।

२) रसखान अपने नेत्रों से क्या देखते हैं?
उ: रसखान अपने नेत्रों से ब्रज के वन, उपवन तथा तालाब को देखते हैं।

३) नादर से सुक व्यास रटैं, प च हारे ताऊ पुनि पार न पावै।
ताहि अहीर की छोहरियां, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावै।।
i) प्रस्तुत पंक्ति कसकी रचना है?
उ: प्रस्तुत पंक्ति रसखान की रचना है।

ii) प्रस्तुत पंक्ति का आशय प्रकट करिए।
उ: प्रस्तुत पंक्ति में रसखान अपना आशय व्यक्त करते हुए कहते है क नारद से सुखदेव, व्यास जैसे मह र्ष भी जिनके स्वरूप भेदीकरण नहीं कर पाए एवं पराजित होकर बैठ गए, उन्हीं कृष्ण को गो पयाँ छछिया- भर छाछ के लए नचाती है।

Teacher's Name - Riya Saha